शोध मंथन Vol. XI No.IV Oct.-Dec. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

वृद्धजनों के बीच पारिवारिक एवं सामाजिक अनुकूलन का एक अध्ययन

डा0 विशेष कुमार गुप्ता
शोध निर्देशक

कविता गुप्ता
***शो**धार्थिनी*
ईमेलः ashwanikkn@gmail.com

सारांश

वर्तमान में वृद्धजनों की आम समस्या उनकी नवीन भूमिका में स्थापन की है। आज समाज व परिवार में वृद्धावस्था को जीवन में असुरक्षित व अस्थिरता के एक पड़ाव के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। इस प्रकार वृद्धावस्था जीवन के उस भाग को प्रदर्शित करती हुई प्रतीत होती है जिसमें आत्मविश्वास में कमी, मनोविकारों में वृद्धि आदि परिलक्षित होती है। परिवार, मित्र, रिश्तेदार, पड़ोसी यथा सामाजिक सुरक्षा आदि का भाव उत्पन्न करके इन समस्याओं से वृद्धजनों को उबारने में सहायक हो सकते हैं।शोधार्थिनी द्वारा वृद्धजनों की उक्त परिप्रेक्ष्य में वर्तमान की वास्तविक स्थिति ज्ञात करने हेतु उक्त शोध पत्र प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्दः *वृद्धावस्था, वृद्धजन, अकेलापन, संवाद, व्यवहार, सूचनाक्रांति, क्रियाशीलता, एकाकीपन*

प्रस्तावना

वृद्धजनों से सम्बन्धित शोध श्रृंखलाओं में बहुत से अध्ययन वृद्धावस्था में उनके स्वास्थ्य एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं के निराकरण व सहयोग से सम्बन्धि है। उचित स्वास्थ्य, परिवार में आत्मीयता एवं सहयोग की स्थिति, सामाजिक मित्रता, सामुदायिक कार्यों में सहभागिता, धार्मिक गतिविधियों में संलिप्तता, वृद्धावस्था में उचित समायोजन के मुख्य घटक है। (मार्गन, 1937) (लेडिस, 1942) वृद्धावस्था मनुष्य जीवन का एक अभिन्न अंग है। संयुक्त राष्ट्र के जनसंख्या विभाग के अनुसार सन् 2050 तक प्रत्येक बच्चे के सापेक्ष दो वृद्ध के बराबर की संख्या प्रस्तावित है। अर्थात् 60+ व्यक्तियों की जनसंख्या जो कि वर्तमान में 20 प्रतिशत से कम है, सन् 2050 तक 32 प्रतिशत तक हो जायेगी। (यू.एन.एफ.पी.ए. एण्ड हैल्प ऐज, 2012 : 19–21) वष्द्धावस्था शारीरिक बदलाव के अतिरिक्त समाज की एक सोच व प्रक्रिया है जो कि एक उम्रसीमा के बाद व्यक्ति को वृद्ध मानने लगती है। (बटलर, राबर्ट, 1969) भारतीय समाज में ऐसा मत रहा है कि अन्य विकसित देशों की तुलना में भारत मे वृद्धजनों को कम समस्याओं का सामना करना पड़ता है, किन्तु वर्तमान समय में यह मत कमजोर पड़ा है परिवार वृद्धजनों की सहायता व देखभाल हेतु प्रस्तुत होने वाली आधार इकाई रहा है किन्तु वर्तमान समाज तेजी से बदलाव की ओर अग्रसर

है, जिसके कारक मुख्य रूप से नगरीयकरण, औद्योगीकरण, शिक्षा, उपभोक्तावादी मानसिकता है। इन बदलावों के कारणों से आधार इकाई (परिवार) कमजोर हुई है। (गंगराडे, 1989)

समाजशास्त्रियों के अनुसार बिना आर्थिक सहायता के वृद्धजनों के सामने अधिक चुनौतियाँ हैं। वृद्धावस्था के काल में वष्द्धजनों को आश्रय की आवश्यकता है चाहे वह परिवार, समाज या वृद्धआश्रम हो जहाँ उन्हें समुचित सुरक्षा व पोषण प्राप्त हो सके। इसके लिए सरकार को चाहे वह केन्द्र या राज्य की हो उनकी उचित देखभाल हेतु व्यवस्था का निर्माण करना ही होगा जिससे वृद्धजन स्वयं को रचनात्मक कार्यों में क्रियाशील रख सकें। (शर्मा के. एल. : 2009)

निदर्शन

शोधपत्र के निदर्शन हेतु मुरादाबाद जनपद के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र से 200–200 वृद्धजनों को चयनित किया गया है। उपर्युक्त निदर्शन में सरकारी, गैर सरकारी, घरेलू, निजी संगठनों से सेवानिवृत्त, व्यवसायी आदि वृद्धजनों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

शोध अध्ययन में उन कारणों एवं परिस्थितियों को प्रतिरूपित करने, जिस कारण से वृद्धजन परिवार व समाज में स्वयं को अलग–थलग अनुभव करते हैं, का प्रयत्न किया गया है। साथ ही परिवार व समाज में आये परिवर्तनों से उनका दृष्टिकोण वृद्धजनों के प्रति किस प्रकार परिवर्तित हुआ है, को भी व्यवस्थित रूप में जानने व सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा वृद्धजनों के कल्याण हेतु किये गये प्रयासों एवं उनके प्रभावों का अध्ययन किया गया है।

आँकड़ों का संग्रह एवं विधितन्त्र

आँकड़ों के संग्रहण हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। जो कि तीन मुख्य भागों में विभाजित है। वृद्धजनों का वैयक्तिक एवं सामाजिक–आर्थिक विवरण, सामाजिक एवं पारिवारिक संरचना में वृद्धजनों के समायोजन के नूतन स्तर तथा आधुनिक परिवेश में परिवार की बदलती भूमिकाएँ और वृद्धजन। चयनित वृद्धजनों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके उनसे साक्षात्कार प्रक्रिया के अन्तर्गत आँकड़ों को संकलित किया गया है।

अकेलापन

रोजगार हेतु बड़े शहरों में पलायन, उच्च आर्थिक स्तर की प्राप्ति हेतु परिवार के समस्त सदस्यों का रोजगार में संलग्न होना, सामाजिक गतिशीलता में कमी, विधवा अथवा विधुर की स्थिति आदि के कारण उत्पन्न अकेलेपन की समस्या को निम्न तालिका द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

सूचनादाताओं के अकेलेपन की स्थिति

क्रम सं	सूचनादाता के अकेलेपन की स्थिति	सूचनादाताओं की आवृत्ति एवं प्रतिशत									
		महिला सूचनादाता				पुरूष सूचनादाता				समस्त सूचनादाता	
		ग्रामीण	नगरीय	योग	:	ग्रामीण	नगरीय	योग	:	कुल	:
1.	हाँ	68	81	149	**74.50**	74	88	162	**81.00**	311	**77.75**
2.	नहीं	32	19	51	**25.50**	26	12	38	**19.00**	89	**22.25**
	योग	**100**	**100**	**200**	**100.00**	**100**	**100**	**200**	**100.00**	**400**	**100.00**

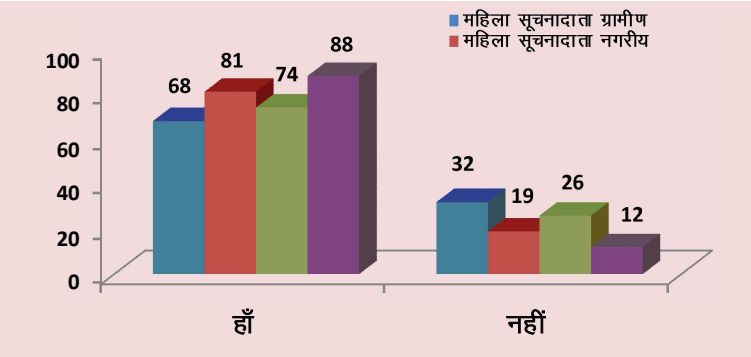

परिवार एवं समाज में संवाद की स्थिति

वर्तमान में वृद्धजनों द्वारा नवीन प्रकार की स्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। प्रौद्योगिकी के प्रसार के कारण परिवार एवं समाज में वृद्धजनों के साथ संवाद की स्थिति की यथार्थता जानने हेतु प्राप्त आँकड़ों को निम्न तालिका द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

सूचनादाताओं के परिवार एवं समाज में संवाद की स्थिति

क्रम सं	सूचनादाता की परिवार एवं समाज में संवाद की स्थिति	सूचनादाताओं की आवृत्ति एवं प्रतिशत									
		महिला सूचनादाता				पुरूष सूचनादाता				समस्त सूचनादाता	
		ग्रामीण	नगरीय	योग	:	ग्रामीण	नगरीय	योग	:	कुल	:
1.	पूर्णतयः प्रभावित	08	13	21	**10-50**	11	19	30	**15.00**	51	**12.75**
2.	प्रभावित	15	24	39	**19-50**	19	25	44	**22.00**	83	**20.75**
3.	उदासीन	27	28	55	**27-50**	32	22	54	**27.00**	109	**27.25**
4.	अप्रभावित	29	17	46	**23-00**	26	18	44	**22.00**	90	**22.50**
5.	पूर्णतयः अप्रभावित	21	18	39	**19-50**	12	16	28	**14.00**	67	**16.75**
	योग	**100**	**100**	**200**	**100.00**	**100**	**100**	**200**	**100.00**	**400**	**100.00**

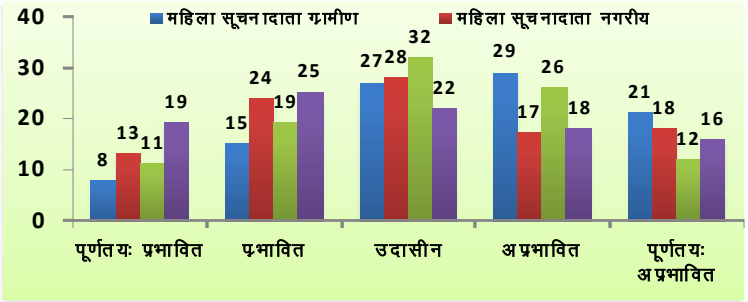

वृद्धजनों के प्रति परिवार के सदस्यों द्वारा किये जाने वाले व्यवहार की स्थिति

वृद्धजनों की सहायता हेतु परिवार एक मुख्य इकाई है। वर्तमान में परिवार में सदस्यों की संख्या घटती जा रही है व परम्परागत शैली से हटकर परिवार के अधिक से अधिक सदस्य

रोजगार में सलंग्न है, उस स्थिति में वृद्धजनों व परिवार के मध्य व्यवहार की स्थिति की समीक्षा निम्न तालिका से प्रदर्शित की गयी है।

सूचनादाताओं के परिवार के सदस्यों द्वारा किये जाने व्यवहार की स्थिति

क्रम सं	सूचनादाता के परिवार के सदस्यों द्वारा व्यवहार की स्थिति	सूचनादाताओं की आवृत्ति एवं प्रतिशत									
		महिला सूचनादाता				पुरूष सूचनादाता				समस्त सूचनादाता	
		ग्रामीण	नगरीय	योग	:	ग्रामीण	नगरीय	योग	:	कुल	:
1.	सम्मानजनक	26	34	60	**30.00**	38	31	69	**34.50**	129	**32.25**
2.	उपेक्षापूर्ण	18	21	39	**19.50**	17	22	39	**19.50**	78	**19.50**
3.	उदासीन	19	15	34	**17.00**	22	24	46	**23.00**	80	**20.00**
4.	विरोधी	28	23	51	**25.50**	12	13	25	**12.50**	76	**19.00**
5.	अपमानजनक	09	07	16	**08.00**	11	10	21	**10.50**	37	**09.25**
	योग	**100**	**100**	**200**	**100.00**	**100**	**100**	**200**	**100.00**	**400**	**100.00**

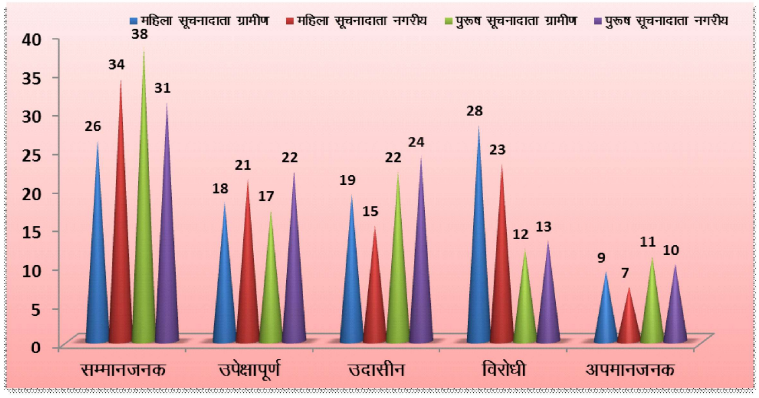

पारिवारिक सदस्यों के सोशल मीडिया के उपयोग से वृद्धजनों के एकाकीपन में वृद्धि हुई है

संचार प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रचलन से नवीन पीढ़ी का अधिक समय मोबाइल, इण्टरनेट आदि में व्यतीत होने के कारण से वृद्धजनों के जीवन में एकाकीपन की वस्तु–स्थिति को समझाते हुए आँकड़ों को निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

सूचनादाताओं पर सोशल मीडिया के प्रभाव की स्थिति

क्रम सं	सूचनादाता पर सोशल मीडिया के प्रभाव की स्थिति	सूचनादाताओं की आवृत्ति एवं प्रतिशत									
		महिला सूचनादाता				पुरूष सूचनादाता				समस्त सूचनादाता	
		ग्रामीण	नगरीय	योग	:	ग्रामीण	नगरीय	योग	:	कुल	:
1.	पूर्णतयः सहमत	17	31	48	**24.00**	21	34	55	**27.50**	103	**25.75**
2.	सहमत	08	15	23	**11.50**	15	19	34	**17.00**	57	**14.25**
3.	उदासीन	26	22	48	**24.00**	23	22	45	**22.50**	93	**23.25**
4.	असहमत	28	17	45	**22.50**	22	16	38	**19.00**	83	**20.75**
5.	पूर्णतयः असहमत	21	15	36	**18.00**	19	09	28	**14.00**	64	**16.00**
	योग	**100**	**100**	**200**	**100.00**	**100**	**100**	**200**	**100.00**	**400**	**100.00**

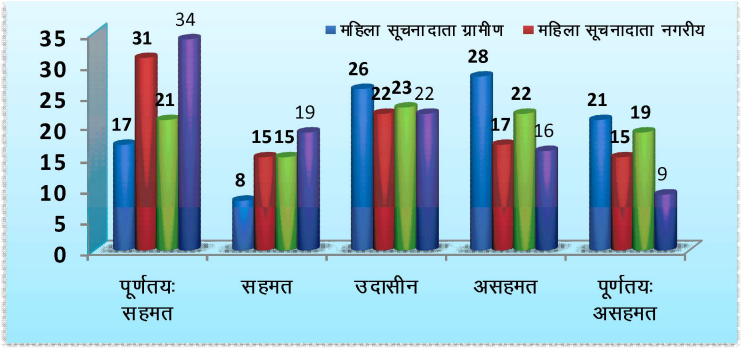

वृद्धजनों के प्रति संचालित योजनाओं की स्थिति

वृद्धजनों के समक्ष आने वाली भिन्न–भिन्न समस्याओं की यथार्थता के कारणों से सरकार द्वारा उनकी सहायता हेतु विभिन्न योजनाओं का संचालन किया जाता है। योजनाओं की वास्तविक स्थिति को जानने हेतु शोधार्थिनी के द्वारा वृद्धजनों से जानकारी संग्रहित की गयी जो कि निम्न तालिका में प्रदर्शित है।

सूचनादाताओं के प्रति संचालित योजनाओं की स्थिति

क्रम सं	सूचनादाता के प्रति संचालित योजनाओं की स्थिति	सूचनादाताओं की आवृत्ति एवं प्रतिशत									
		महिला सूचनादाता				पुरूष सूचनादाता				समस्त सूचनादाता	
		ग्रामीण	नगरीय	योग	:	ग्रामीण	नगरीय	योग	:	कुल	:
1.	पूर्णतयः पर्याप्त	11	08	19	**09.50**	12	09	21	**10.50**	40	**10.00**
2.	पर्याप्त	08	13	21	**10.50**	09	08	17	**08.50**	38	**09.50**
3.	उदासीन	23	19	42	**21.00**	18	25	43	**21.50**	85	**21.25**
4.	अपर्याप्त	36	31	67	**33.50**	28	28	56	**28.00**	123	**30.75**
5.	पूर्णतयः अपर्याप्त	22	29	51	**25.50**	33	30	63	**31.50**	114	**28.50**
	योग	**100**	**100**	**200**	**100.00**	**100**	**100**	**200**	**100.00**	**400**	**100.00**

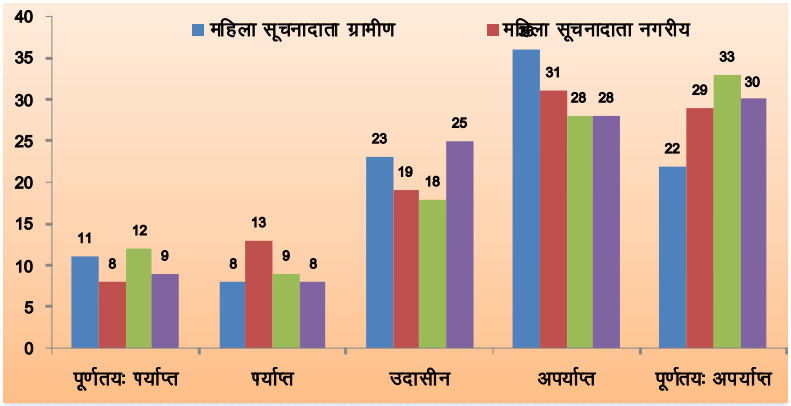

विश्लेषण

प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि वर्तमान में वृद्धजनों के अकेलेपन की स्थिति में वृद्धि हुई है, जिसके मुख्य कारण नगरीयकरण, औद्योगीकरण, सूचना क्रांति में तेजी आदि हैं। वर्तमान समय में समाज व परिवार में वृद्धजनों के साथ संवाद व व्यवहार की स्थिति में भी उल्लेखनीय परिवर्तन आये हैं। अधिकांशतः लगभग 33 प्रतिशत वृद्धजनों का मानना है कि संवाद की स्थिति निम्न हुई है वहीं अभी भी लगभग 40 प्रतिशत वृद्धजनों के अनुसार संवाद की स्थिति अच्छी है। वृद्धजनों के एकाकीपन में वृद्धि में एक नवीन कारक के रूप में पारिवारिक सदस्यों द्वारा सोशल मीडिया का बढ़ता उपयोग भी है। लगभग 40 प्रतिशत वृद्धजनों के अनुसार एकाकीपन के लिए यह एक महत्वपूर्ण कारक प्रतीत होता है।

आज के भौतिकवादी युग में कार्य के बढ़ते दबाबों के मध्य परिवार में वृद्धजनों के प्रति सम्मान की भावना में कमी आयी है जो कि उनके प्रति किये गये व्यवहार में परिलक्षित होती है। लगभग 39 प्रतिशत वृद्धजनो का मानना है कि सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएं अपर्याप्त है व उनमें विभिन्न स्तरों पर सुधार की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

वर्तमान में पुरानी रूढ़िवादी विचारधाराओं से बाहर आकर रिश्ते नये आकार, आयाम प्राप्त कर रहे हैं। इन सबके बीच वृद्धावस्था भी एक नये परिवर्तनकारी दौर से गुजर रही है। जनसांख्यिकीय और सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन के एक परिणाम के रूप में परिवार के ढाँचे में परिवर्तन संभावित रूप से एक असुरक्षित आबादी का उद्भव कर सकता है। जिसकी सुरक्षा हेतु नयी नीतियाँ अस्तित्व में लानी होगी जिससे समय रहते वृद्धजनों के लिए सुरक्षा व संरक्षण प्राप्त कराया जा सके।

भविष्य में वृद्धावस्था को नये सिरे से परिभाषित करने की भी आवश्यकता है, क्योंकि वृद्धजन परिवार, समुदाय और वृहत्तर समाज की भिन्न–भिन्न क्रियाओं में सक्रिय भूमिका का निर्वहन कर सकते हैं। वृद्धजनों की सामाजिक क्रियाशीलता से हम वर्तमान व भविष्य के वृद्धजनों के जीवन में गुणवत्ता व सुधार ला सकते है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. गंगराडे, के. डी. (1989): *''एमरजिंग कॉन्सेपशन ऑफ एजिंग इन इण्डिया, ए सोशियो– कल्चरल परसेपक्टिव''*, द इस्टर्न एन्थ्रोपोलिजिस्ट, 42 : 2
2. बटलर, आर. एन. (1969): *''ऐजिज्म : एनअदर फार्म ऑफ विगोट्री''*, ग्रिन्टोलॉजिस्ट, 9 : 243–246
3. शर्मा, के. एन. (2009): *''डाइमेन्शन्स ऑफ ऐजिग, इण्डियन स्टडीज''*, रावत पब्लिकेशन्स, सेक्शन डीः 149
4. लेन्डिस, जे. टी. (1942): *''सोशल साइकोलॉजिकल फैक्ट्रस ऑफ ऐजिंग''*, सोशल फोर्सस्, 20 : 468–70

5. मोर्गन, क्रिस्टिन एम. (1937): *''द एटीट्यूड एण्ड एडजेस्टमेण्ट ऑफ रेसिपिएण्ट्स ऑफ ओल्ड ऐज असिस्टेन्स इन अपस्टेट एण्ड मेट्रोपॉलिट्टिन न्यूयार्क''*, आर्क, साइको, न.: 214

6. जिला सांख्यिकीय पत्रिका, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश (2015).

7. हेल्प ऐज इण्डिया, *''इकोनॉमिक एण्ड हेल्थ सर्वे ऑन इण्डियास् ओल्डेस्ट ओल्ड (80+) – नीड, केयर एण्ड एक्सेस''*, हेल्प ऐज इण्डिया, 2010, पृ0 **17–23, 39.**

8. यू॰ एन॰ एफ॰ पी॰ ए॰ एण्ड हेल्प ऐज रिपोर्ट, *''ऐजिंग इन द ट्वेन्टी–फर्स्ट सेंचुरीः ए सेलीब्रेषन एण्ड ए चैलेंज''*, न्यूयार्क एण्ड लंदन, 2012, पृ0 **19–21.**